ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 113-115

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

वैश्वीकरण का गामीण जीवन पर प्रभाव

अमृता सिंह

शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ0प्र0) भारत

Received-20.01.2023, Revised-25.01.2023, Accepted-29.01.2023 E-mail: luckyamrita11@gmail.com

सारांशः ***वैश्वीकरण ने समय और दूरी को समाप्त कर राष्ट्र राज्यों के लिए आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आदान प्रदान के रास्ते खोले हैं। इस प्रकिया द्वारा अनेकों देशों का सम्पर्क अन्य देशों से हुआ जिससे परिणाम स्वरूप सभी को विकास करने का अवसर मिला।***

हमारा भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है, जहां 75% जनसंख्या कृषि क्षेत्र से जुड़ी हुयी है। वैश्वीकरण की आँधी ने भारतीय सभ्यता व संस्कृति को भी अपने आगोश में लिया हुआ है जिसके कारण ना सिर्फ शहरों में अपितु गांवों के आन्तरिक व बाह्य स्वरूप में काफी मूलभूत परिवर्तन आए। कृषि क्षेत्र से जुड़ें परम्परागत साधनों, तकनीकों, जीवन शैली, खानपान, पोशाक, व्यवहार तक सभी बदल गये है। सभी तरफ केवल पाश्चात्य् जीवन शैली की ही जाल दिखाई देता है। वैश्वीकरण के पूर्व तक ग्रामीण जीवन पूरी तरह से स्थायित्व व शान्ति का गुण लिए हुआ था, परन्तु इसके पश्चात् बेरोजगारी, कृषि क्षेत्र से पलायन, किसानों की आत्महत्या दरों ने इस प्रश्न को खड़ा कर दिया है कि क्या वैश्वीकरण ने विश्व ग्राम की संकल्पना के प्रमुख उद्देश्य समानता तथा विकास को पूरा किया है।

निःसंदेह वैश्वीकरण ने गांवों में बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा, शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाएं मुहैया करायी है, किन्तु इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि हमारे समाज से प्रेम, बड़ों के प्रति आदर, उत्सवों के प्रति मनोभाव रिश्तों के प्रति लगाव व खुशी में व्यापक बदलाव किए है।

कुंजीभूत शब्द– आर्थिक, सांस्कृतिक आदान प्रदान, सम्पर्क, जनसंख्या, कृषि क्षेत्र, वैश्वीकरण, सभ्यता, आन्तरिक स्वरूप।

हमारा भारत देश गांवों का देश माना जाता है, जिसके 75% आवादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से जुड़ी हुयी है। परिवर्तन प्रकृति का ही नियम है इसी क्रम में ग्रामीण जीवन में भी परिवर्तन का रूप साफ तौर पर देखा जा सकता है किन्तु वैश्वीकरण के आने के बाद इस क्षेत्र में अत्याधिक विकास हुआ, जिसके उपरान्त ग्रामीण संरचना के मूलरूप में परिवर्तन आया, जिसके कारण गांवों का वो स्वरूप नष्ट हो गया जो कभी हमारे आंखों के सामने बन जाया करती थी। 1990 के बाद वैश्वीकरण ने भारत में तेजी से बदलाव किया। शिक्षा, व्यापार, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य इत्यादि में व्यापक परिवर्तन देखे गये, किन्तु इसके विपरित समाज में अपराध, अराजकता, प्रतिस्पर्धा, घृणा, हत्या, बलात्कार के मामलों में भी तेजी देखी गयी। वैश्वीकरण की आड़ में पाश्चात्य जीवनशैली ने हमारी संस्कृति को हीन बना दिया है। खास तौर पर युवा वर्ग विदेशी दिनचर्या को ही अपना रहे हैं। वही बात जब हम इसके परिणाम को गांवों के सन्दर्भ में देखते है, तो यह स्पष्ट होता है किस प्रकार प्रारम्भिक कृषि उत्पादन साधनों के स्थान पर नये साधन, पुरानी तकनीकों के स्थान पर नये तकनीकों का प्रयोग बढ़ गया है। इससे उत्पादन क्षमता में तो अवश्य की वृद्धि हुयी है, किन्तु गुणवत्ता में कमी आ गयी है। फसलों पर ना जाने कितने प्रकार के कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है, फलों व सब्जियों को जल्दी बड़ा करने के लिए इन्जेक्शन का प्रयोग किया जाता है जिससे मनुष्य ना जाने कितने ही प्रकार के असाध्य बीमारियों का शिकार होता जा रहा है। इसके अलावा जब हम ग्रामीण संरचना की बात करें तो पहले के जैसे–संयुक्त परिवार प्रणाली, गोत्र, वंश, प्रेम, स्नेह व सामूहिकता की भावना कही नही देखने को मिलती। गांवों में भी टी0बी0, मोबाइल, इन्टरनेट, के प्रयोग ने व्यापक परिवर्तन किए, जिससे वहां भी लड़ाई झगड़े, हत्या, छींटाकसी, दुर्व्यवहार के मामले बढ़ने लगे। गांवों में भी अब परम्परागत जीवन शैली के स्थान पर नयी पाश्चात्य जीवन शैली ने धीरे–धीरे अपना स्थान बना लिया है इसलिए अब हर जगह हमें जिम, व्यूटी पार्लर, मॉल, सलॉन आदि देखने को मिलते है। छोटे–छोटे बच्चें भी अब माता पिता की बात नही मानते, किसान अच्छें उत्पाद ना हो पाने के कारण या कर्ज के बोझ से आत्म हत्याएं करने लगे है। किसान आत्म हत्या की स्थिति 1990 के बाद जन्मी अवस्था है। गांवों में परम्परागत पोशाक, खान पान, रहन सहन, जीवन जीने का तरीका, उत्पादन का तरीका आदि सब बदल गये है। सभी तरफ वैश्वीकरण की आंधी ने अपना पंख फैला लिया है। ग्रामीण युवा अब कृषि कार्य में संलिप्त नही होना चाहते थे, अच्छी नौकरी, पढ़ाई, अच्छे जीवन के लालच में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप हमारे अन्नदाता और भी कर्ज में डूबने लगते है, बच्चों के शहरों में जाने से वे अकेलेपन का भी शिकार होते जा रहे है। वैश्वीकरण ने हमारे देश की नींव को हीला कर रख दिया है। भारत में किसान आत्महत्या के मामले चौकाने वाले है। जिसे देखकर स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण ने विश्व ग्राम की आड़ में हमारे साथ छलावा किया है। जिसका भुगतान हम अपनी भारतीय संस्कृति को खोकर कर रहे है।

NCRB की रिपोर्ट में यह स्पष्ट किया गया है कि वर्ष 2020 में कृषि क्षेत्र से जुड़े, 10,177 लोगों (5,579 किसान तथा

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

4,598 कृषि मजदूर) ने आत्म हत्या की। अकेले महाराष्ट्र में वर्ष 2020 में 2547 किसानों ने आत्म हत्या की।

भारत में प्रतिवर्ष 10 हजार से ज्यादा किसानों द्वारा आत्म हत्या की जाती है।

चरों की व्याख्या/विवरणः– (Define Variables)-

वैश्वीकरण (Globelization)- भारत में 1990 के बाद वैश्वीकरण को देख जा सकता है। वैसे तो वैश्वीकरण की प्रक्रिया कोई नवीन घटना नही है, बल्कि फ्रास व इंग्लैण्ड द्वारा अन्य देशों को अपनी कालोनी बनाने की प्रक्रिया वैश्वीकरण को प्रदर्शित करती है। वैश्वीकरण की व्याख्या हर विज्ञान अपनी अपनी दृष्टिकोण से करता है। कुछ इसे आर्थिक प्रक्रिया, कुछ से सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया तथा कुछ इसे इतिहास का छलावा भी कहते है। समाजशास्त्र में वैश्वीकरण की अवधारणा को स्थापित करने का काम राबर्टसन को जाता है, इसलिए इन्हें इसका जनक माना जा सकता है।

गिडिग्स ने अपनी पुस्तक कॉन्सीक्वीनसेस ऑफ मॉर्डनीटी में वैश्वीकरण को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह आधुनिकता का बहुत बड़ा परिणाम है।

स्टुअर्ट हॉल– नये स्थान और समय में संस्कृतियों और समुदायों के एकीकरण और उसे जोड़ने वाले तथा दुनिया को एक वास्तविकता और अधिकाधिक अर्न्तसम्बन्धित बनाने वाले अर्थ में वैश्वीकरण को देखा जा सकता है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि वैश्वीकरण देशों में एकीकरण या विश्व में ऐसा संकुचन पैदा करता है, जिससे हम दुनिया के किसी भी कोने में इतनी जल्दी और सस्ते में पहुंच जाते है, जो पहले कभी सम्भव नही था।

ग्रामीण जीवन (Rural life)- भारत गांवों का देश है या यू कहे कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है तो अतिशयोक्ति न होगी। भारतीय ग्रामीण जीवन सादगी और प्राकृतिक शोभा का भण्डार है। ग्रामीणों की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि है, कुछ लोग पशुपालन तथा कुटीर उद्योग धन्धों में संलग्न होते है। कठोर परिश्रम, सरल स्वभाव, उदार हृदय, संयुक्त परिवार, आपसी प्रेम, हरियाली तथा प्रदूषण मुक्त वातावरण गांवों की विशेषताएं है।

ग्रामीण लोगों को वो सुविधाएं नही मिल पाती, जो शहरों में लोगों की प्राप्त होती है, जैसे उच्च शिक्षा हेतु कालेज, बीमारियों के अच्छें इलाज हेतु बढ़िया अस्पताल आदि। आज भी इस 21 सदीं में ऐसे कई गांव है, जहां अच्छी सड़क तक नही है। इस प्रकार हम कह सकते हैं, आज भी गांवों में जीवन काफी कष्टकारी ही है। गांवों में आज भी बुनियादी सुविधाओं की खास कमी है, जिसके कारण लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे है।

उद्देश्य–

1. कृषि क्षेत्र में वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. गांवों में वैश्वीकरण से उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करना।
3. बदलती ग्रामीण संरचना का अध्ययन करना ।

परिकल्पना–

1. वैश्वीकरण के द्वारा कृषि में व्यापक प्रभाव पड़ा है।
2. वैश्वीकरण के द्वारा ग्रामों में भी उपभोक्तावादी प्रवृत्ति का विकास हुआ है।
3. वैश्वीकरण के प्रभाव से गांवों में भी महिलाआं की भागीदारी, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ी है।

अध्ययन पद्धति– प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक डाटा पर आधारित है जिसमें विभिन्न पुस्तकों, जर्नलों, पत्रिकाओं और बेबसाइटों का प्रयोग किया गया है तथा जो कि उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि पर आधारित है।

उद्देश्य कम में डाटा का विश्लेषण–

1. कृषि क्षेत्र में वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना– भारत कृषि प्रधान देश है और कृषि के परम्परागत उत्पादन साधनों की बात करें तो पहले हल, कुदाल, फरसा, बैल इत्यादि का ही प्रयोग करके अन्नदाताओं द्वारा उत्पादन किया जाता था किन्तु वैश्वीकरण के उपरान्त हर क्षेत्र की भांति कृषि क्षेत्र में भी व्यापक परिवर्तन आएं। परम्परागत उत्पादन साधनों के स्थान पर टैक्टर, थ्रेसर मशीन, पावर टिलर, पावर वीडर आदि जैसी आधुनिक मशीनों का प्रयोग बढ़ा, जिससे बेरोजगारी भी बढ़ी, क्योंकि जो कार्य कृषि मजदूर करते थे वो सब काम अब मशीनों द्वारा कम समय में और जल्दी हो जाने से, उनकी जरूरत खत्म हो गयी जिससे ग्रामीण क्षेत्र के लोग कृषि कार्य से अन्यत्र कार्य ढूंढने लगे।

वही जब हम अनाजों के उत्पादन के समय लगने वाले कीड़े–मकोड़ों की बात करें तो पहले नीम के तेल, नीम के बीज का पाउडर इत्यादि का ही प्रयोग किया जाता था, किन्तु अब बाजार में तरह तरह के कीटनाशक व दवाईयों के आ जाने से इसका प्रयोग बढ़ गया, जिसके कारण मनुष्य में तरह तरह की बीमारियां फैल गयी। फलों और सब्जियों को इन्जेक्शन लगाकर उन्हें जल्दी बड़ा किया जाता है और पकाया जाता है, जिससे उत्पादन में जरूर ही वृद्धि हुयी, किन्तु उसके गुणवत्ता में कमी आ गयी। अतः हमें अपने परम्परागत कृषि उत्पादन साधनों और तकनीकों का ही प्रयोग करना चाहिए ।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

2. गांवों में वैश्वीकरण से उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करना– भारतीय ग्राम अपने सादा जीवन और प्रेम व्यवहार के कारण ही प्रसिद्ध है। गांवों के लोगों में कई छलावा, द्वेष, प्रतिस्पर्धा, अहंकार नही होता, किन्तु वैश्वीकरण की आंधी ने शहरों को अपने आगोश में लेने के बाद गांवों की ओर अपना पैर पसार दिया है। टी0बी0, मोबाइल, इण्टरनेट इत्यादि सुविधाओं ने घर–घर में अपना स्थान बना लिया है, जिसके कारण वहां भी लोग पाश्चात्य सभ्यता को अपनाने लगे है। युवा वर्ग कृषि कार्य में संलिप्त नही होना चाहते। अधिकतर युवा शिक्षा व नौकरी के लिए शहरों की ओर पलायन कर रहे है, जिससे अनाज उत्पादन की समस्या, शहरों में जनसंख्या की समस्या तथा गांवों में मां–बाप के अकेले रह जाने, जैसी समस्याओं का उदय हो रहा है।

भारतीय गांव में भी अब प्रतिस्पर्षा, लड़ाई झगड़ें मनमुटाव चोरी, महिलाओं के प्रति अत्याचार जैसे घरेलू हिंसा, बलात्कार, छेड़छाड़ के मामले लगातार बढ़ते जा रहे है। गांवों में अब परम्परागत पोशाक पहने कम ही लोग दिखते है, अब सभी लोग खुद को आधुनिक बनाना चाहते है, इसी होड़ में वे पाश्चात्य जीवन शैली को अपनाते हुए देखे जा सकते है।

3. बदलती ग्रामीण सामाजिक संरचना का अध्ययन करना– जब हम ग्रामीण सामाजिक संरचना की बात करते है तो हमारे मस्तिष्क में समुदाय का निर्माण करने वाले विभिन्न समूहों जैसे नातेदारी, वंश गोत्र, जाति, उपजाति तथा वर्ग की छाया कृति हमारे आंखों के सामने बन जाती है, जो सामाजिक संरचना का निर्माण करते है गांवों में प्रेम, स्नेह, लगाव, सौहार्दता, भाई चारा तथा आदर ऐसे तत्व है, जो उन्हें अनुपम बनाते है किन्तु वैश्वीकरण ने गांवों से उनकी मूलभूत विशेषताओं को छीन लिया है। हर तरफ राग द्वेष, अपराध तथा गला काट प्रतियोगिता दिखती है। गांवों में भी अब कोई किसी का सगा नही रहा, सभी अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर अपना काम निकालना चाहते है। वैश्वीकरण से आए कुछ बदलाव समाज हेतु सकारात्मक रहे जैसे सभी को बराबर का हक, सभी को शिक्षा, सभी को अच्छे स्वास्थ्य तथा समान वेतन ने समाज में बराबरी लायी किन्तु बढ़ते अपराधिकरण ने सभी जगह अपना रूप दिखाया है जिससे गांव भी बेजार नही रहे। अतः इस प्रकार हम देखते है कि ग्रामीण संरचना पहले के जैसे नही रही। महिलाएं व लड़कियां जो केवल घर की चहार दिवारी तक सीमित थी, वे भी अब अपना हक जानने व समझने लगी है। किन्तु इस बात से भी नही नकारा जा सकता कि वैश्वीकरण के बाद ही महिलाओं के प्रति लोगों की मानसिकता में बदलाव आया है वे उन्हें केवल मनोरंजन का साधन या काम को बढ़ने वाली प्रेरक के रूप में मानने लगे है इसलिए व छोटी–छोटी बच्चियों से लेकर बुढ़ी औरत तक कोई सुरक्षित नही है।

निष्कर्ष– वैश्वीकरण एक दो धारी तलवार है जिसने समाज के कुछ पक्षों में सकारात्मक बदलाव किए है तो कहीं ज्यादा नकारात्मकता फैलायी है। भारतीय ग्रामों का जो स्वरूप हमारे मनमस्तिष्क मे है, वैसा रूप अब नही देखने को मिलता। सभी जगह केवल लालच, प्रतियोगिता, कलह, घृणा ही फैलती जा रही है। वैश्वीकरण ने गांवों से उसकी मूलभूत विशेषताओं या यू कहे कि भारत को उसकी आत्मा या धड़कन से अलग करने का काम किया है। आधुनिक होने की ऐसी होड मची है कि हम सभी अपनी संस्कृति विरासत व धरोहर को हीन तथा नीचा मानते हुए विदेशी सभ्यताओं व परम्पराओं को अपनाते जा रहे है, यदि ऐसा ही होता रहा तो भारत से उसकी पहचान ही छीन जाएगी। इसलिए समय रहते हुए हमें अपने संस्कृति, धरोहरो, रीतिरिवाज, आदि का बचाना होगा, तभी हम वास्तविक रूप से विकास पथ पर आगे बढ़ सकेगें।

सुझाव– वैश्वीकरण के प्रभाव से बचने के लिए मेरा मत है कि –

1. हमें सबसे पहले अपनी जड़ों को मजबूत करना होगा इसलिए ग्रामों में भी आज की आवश्यकता के हिसाब से मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी तभी युवा वर्ग ग्रामों से शहरों की ओर शिक्षा, स्वास्थ्य व रोजगार हेतु शहरों की ओर पलायन नही करेंगे।
2. हमें अपने अन्नदाताओं का विशेष कर ध्यान रखना होगा, तॉकि वे आत्महत्या जैसे कृत्य को ना अन्जाम दें।
3. हमे अपने भावी पीढ़ीं को भारत की प्राचीनता व महानता के बारे में अवगत होगा, यदि वे उसे अपने मस्तिष्क में अपना लेंगे तो कभी भी वे अन्य सभ्यता व संस्कृति की ओर अपना रूख नही करेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गिडिग्स, एन्थोनी–दी कॉन्सीक्वेनसेस आफ मॉर्डनीटी, स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, स्टेनफोर्ड 1990.
2. हाल, स्टुअर्ट–क्वेश्चन ऑफ कल्चर आईडेनटिटी इन माइर्निटी एण्ड इन्ट्रोडक्शन टू मार्डन सोसाइटी 1996.
3. https://ndtv.in/lindia-news/ (किसान आत्महत्या)।
4. hi.m.wikipedia. org (भारत में किसान आत्म हत्या)।
5. लहरिया, चन्द्रकान्त–ग्रामीण भारत की स्वास्थ्य और पोषण : एक समग दृष्टिकोण।

*****